नमाज़ियों की चालीस ग़लतियाँ

नमाज़ियों की चालीस ग़लतियाँ

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
إنَّ أَوَّلَ ما يُحاسَبُ بِهِ الْعَبْدُ يَوْمَ الْقِيامَةِ مِنْ عَمَلِهِ صَلَاتُهُ فَإِنْ صَلُحَتْ فَقَدْ أَفْلَحَ وَأَنْجَحَ وَإِنْ فَسَدَتْ فَقَدْ خَابَ وَخَسِرَ
[(ترمذي، نسائى، ابن ماجه عن أبي هريرة (صحيح) [صحيح الجامع ٢٠٢٠]

” क़ियामत के दिन बंदे से उसके आमाल में से सबसे पहले उसकी नमाज़ का हिसाब लिया जाएगा। अगर उसकी नमाज़ सही निकल आई तो वो कामयाब व कामरान हो गया। और अगर उसकी नमाज़ में बिगाड़ रहा तो वो नाकाम वा ना-मुराद हो गया।”

1. नमाज़ की पाबन्दी ना करना

قال : خَمْسُ صَلَوَاتٍ كَتَبَهُنَّ اللَّهُ عَلَى الْعِبَادِ فَمَنْ جَاءَ بِهِنَّ لَمْ يُضَيِّعْ مِنْهُنَّ شَيْئًا اسْتِخْفَافًا بِحَقِّهِنَّ كَانَ لَهُ عِنْدَ اللَّهِ عَهْدٌ أَنْ يُدْخِلَهُ الْجَنَّةَ وَمَنْ لَمْ يَأْتِ بِهِنَّ فَلَيْسَ لَهُ عِنْدَ اللَّهِ عَهْدٌ إِنْ شَاءَ عَذَّبَهُ وَإِنْ شَاءَ أَدْخَلَهُ الْجَنَّةَ. [موطا، مسند احمد، ابو داود، نسائى، ابن ماجه ابن حبان حاكم عن عبادة بن الصامت. صحيح الجامع ٣٢٤٣] (صحيح)

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
“अल्लाह ताला ने बंदों पर पांच नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं। पांच नमाजों का एहतेमाम करे और उन के हक में ला परवाही बरतते हुवे उन्हें ज़ाया ना करे तो उसके लिए अल्लाह के यहां यह वादा है कि अल्लाह तआला उसे ज़रूर जन्नत में दाख़िल करेगा। इसके बिल मुक़ाबिल जो शख़्स इन नमाज़ों का एहतमाम ना करे तो उसके लिए अल्लाह के यहाँ कोई वादा नहीं। उसे इख़्तियार है कि वो हमें (बंदे को) अज़ाब दे या फिर मुआफ़ करदे।”

قال : إنَّ بَيْنَ الرَّجُلِ وَبَيْنَ الشِّرْكِ وَالْكُفْرِ تَرْكَ الصَّلَاةِ ((مسلم: الإيمان ١٣٤ – (٨٢)) عن جابر

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
“बंदे और शिर्क व कुफ्र के दरमियान बस नमाज़ का छोड़ देना है।”

2. दिखावे की नमाज पढ़ना :

قال تعالى : إِنَّ الْمُنَافِقِينَ يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ وَإِذَا قَامُوا إِلَى الصَّلَاةِ قَامُوا كُسَالَى يُرَاءُونَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُونَ اللَّهَ إِلَّا قَلِيلًا [النساء ١٤٢]

अल्लाह तआला ने फरमाया :

"मुनाफिक़ीन (अपने गुमान में) अल्लाह के साथ चालबाजी करते हैं और (उनकी इस हरकत की सजा में) अल्लाह भी उनके साथ तरकीब करता है। (उनका हाल ये है कि) जब वो नमाज के लिए खड़े होते हैं तो बहुत ही बोझल होकर (उठते हैं), वो महज़ लोगों के सामने दिखावा करते हैं, और अल्लाह को कम ही याद करते हैं।" (सूरह अन-निसा-142)

عَنْ أَبِي سَعِيدِ الْخُدْرِي قَالَ:

خَرَجَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ وَنَحْنُ نَتَذَاكَرُ الْمَسِيحَ الدَّجَّالَ فقال: أَلا أُخْبِرُكُمْ بِمَا هُوَ أَخْوَفُ عَلَيْكُمْ عِنْدِي مِنَ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ؟ فَقُلْنَا: بَلَى يَا رَسُولَ اللَّهِ فَقَالَ: الشِّرْكُ الْخَفِيُّ، أَنْ يَقُومَ الرَّجُلُ فَيُصَلِّي فَيُزَيِّنُ صَلَاتَهُ لِمَا يَرَى مِنْ نَظَرِ رَجُلٍ ابن ماجه، بيهقي) [صحيح الترغيب ٣٠ (حسن)

अबू सईद खुदरी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है, फरमाते हैं:

"रसूल ए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हमारे पास बाहर तशरीफ़ लाए और हम दज्जाल का तज़किरा कर रहे थे। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया : क्या मैं तुम्हें एक ऐसी चीज ना बताऊं जिसका मुझे तुम पर दज्जाल से भी ज्यादा ख़ौफ़ है ? तो हमने कहा : जरूर ऐ अल्लाह के रसूल ! आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया : शिर्क-ए-खफी (छुपा हुआ शिर्क), कि आदमी नमाज पढ़ने लगे और किसी के देखने की वजह से अपनी नमाज को और मुज़य्यन करने लगे।"

3. ख़िलाफ़- ए-सुन्नत के तारिक़े के अनुसार नमाज़ पढना :

عَنْ أَبِي سُلَيْمَانَ مَالِكِ بْنِ الحُوَيْرِث قَالَ:

أَتَيْنَا النَّبِيَّ ﷺ وَنَحْنُ شَبَبَةٌ مُتَقَارِبُونَ فَأَقَمْنَا عِنْدَهُ عِشْرِينَ لَيْلَةً فَظَنَّ أَنَّا اشْتَقْنَا أَهْلَنَا

وَسَأَلَنَا عَمَّنْ تَرَكْنَا فِي أَهْلِنَا، فَأَخْبَرْنَاهُ – وَكَانَ رَفِيقًا رَحِيمًا –

فَقَالَ: «ارْجِعُوا إِلَى أَهْلِيكُمْ فَعَلِّمُوهُمْ وَمُرُوهُمْ، وَصَلُّوا كَمَا رَأَيْتُمُونِي أُصَلِّي،

وَإِذَا حَضَرَتِ الصَّلَاةُ فَلْيُؤَذِّنْ لَكُمْ أَحَدُكُمْ، ثُمَّ لِيَؤُمَّكُمْ أَكْبَرُكُمْ»

بخاري: الأدب ٦٠٠٨ – مسلم : المساجد ومواضع الصلاة ٢٩٢ – (٦٧٤)] واللفظ للبخاري

हज़रत अबू सुलेमान मलिक बिन हुवैरिस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है, फरमाते हैं:

"हम नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास आये, और हम सब हम-उम्र नौजवान थे। हमने बीस रातों तक आपके साथ काम किया। आप को एहसास हुआ कि हमें अपने घर वालों की याद आ रही है।

आप ने हमसे पूछा कि हम अपने पीछे किन को छोड़ आये हैं, तो हमने आप को (अपने घर वालों के बारे में) बताया। नबी ए करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बड़े ही नर्म मिज़ाज और रहम दिल इंसान थे।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया : तुम लोग अपने घर वालों के पास लौट जाओ और उन्हें (दीन की) तालीम दो और (शरीयत पर अमल करने का) हुक्म दो, और तुम वैसे ही नमाज पढ़ो जैसे मुझे पढ़ते देखा

है, और जब नमाज का वक्त हो जाए तो तुम में से एक शख़्स अज़ान दे और जो शख़्स तुम में बड़ा है वह इमामत करे।“

4. पेशाब पखाने की शदीद हाज़त के बावजुद नमाज पढ़ना

قال : لَا صَلَاةَ بِحَضْرَةِ الطَّعَامِ وَلَا هُوَ يُدَافِعُهُ الْأَخْبَثَانِ
(مسلم: المساجد ومواضع الصلاة ٦٧ – ٥٦٠)

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
“खाना सामने आ जाने के बाद नमाज़ नहीं, और उस वक्त भी नहीं जब आदमी दो खबीस चीजें (यानी पेशाब व पखाना) की हाजत महसूस कर रहा हो ।“

إِذَا أَرَادَ أَحَدُكُمْ أَنْ يَذْهَبَ الْخَلَاءَ وَقَامَتِ الصَّلَاةُ فَلْيَبْدَأْ بِالْخَلَاءِ.
(موطاء الشافعي ابن حبان، ترمذی، نسائی، ابن ماجه ابن حبان حاكم بيهقي عن عبد الله بن أرقم. صحيح الجامع (٣٧٣] صحيح)

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
“जब तुम में से किसी शख़्स को बैतुल-ख़ला जाना हो और नमाज़ खड़ी हो जाए तो उसे चाहिए कि पहले हाजत से फ़ारिग़ हो जाए।”

5. हवा ख़ारिज होने के बावजूद नमाज पढ़ना

قال : لَا يَقْبَلُ اللَّهُ صَلَاةَ أَحَدِكُمْ إِذَا أَحْدَثَ حَتَّى يَتَوَضَّأَ
بخاري: الحيل ٦٩٥٤ – مسلم الطهارة ٣٣٠] عن أبي هريرة

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
“तुम में से किसी का वुज़ू टूट जाए तो अल्लाह तआला उसकी नमाज़ उस वक़्त तक क़बूल नहीं करता जब तक कि वह दोबारा वुज़ू ना कर ले।”

قال : وَلَا يُحافظ على الْوُضُوءِ إِلَّا مُؤْمِنٌ (1)
(مسند احمد، ابن ماجه، حاكم بيهقي عن ثوبان (ابن ماجه، طبراني عن ابن عمرو (طبراني) عن سلمة بن الأكوع). صحيح الجامع ٩٥٢) صحيح)

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया : “वुज़ू की पाबंदी मोमिन ही करता है।”

6. बदबू-दार चीज़ खा कर मस्जिद में आना

قال : مَنْ أَكَلَ مِنْ هَذِهِ الشَّجَرَةِ فَلَا يَقْرَبَنَّ مَسْجِدَنَا وَلَا يُؤْذِيَنَّا بِرِيحِ الثُّومِ
مسلم: المساجد ومواضع الصلاة ٧١ – (٥٦٢))

وفي رواية :
فَإِنَّ الْمَلَائِكَةَ تَأَذَّى مِمَّا يَتَأَذَّى مِنْهُ الْإِنْسُ
[(مسلم: المساجد ومواضع الصلاة ٧٢ – (٥٦٣)

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
"जो शख़्स इस (बदबू-दार) से कुछ खा ले वो हमारी मस्जिद के करीब भी ना आए, और हमें लेहसन की बू से तकलीफ़ ना दे।"
एक रिवायत में है :
"इसलिए कि फरिश्तों को भी उस चीज़ से तकलीफ़ होती है जिस से लोगों को तकलीफ़ होती है।"

7. तहियात उल मस्जिद अदा किये बगैर मस्जिद में बैठना

عَنْ أَبِي قَتَادَةَ صاحِب رَسُولِ اللَّهِ قَالَ:
دَخَلْتُ الْمَسْجِدَ وَرَسُولُ اللَّهِ جَالِسٌ بَيْنَ ظَهْرَانَيِ النَّاسِ
قَالَ فَجَلَسْتُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ : مَا مَنَعَكَ أَنْ تَرْكَعَ رَكْعَتَيْنِ قَبْلَ أَنْ تَجْلِسَ
قَالَ فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ، رَأَيْتُكَ جَالِسًا وَالنَّاسُ جُلُوسٌ قَالَ : فَإِذَا دَخَلَ أَحَدُكُمُ الْمَسْجِدَ فَلَا يَجْلِسْ حَتَّى يَرْكَعَ رَكْعَتَيْنِ
هذا لفظ مسلم والبخاري فلا يَجْلِسْ حَتَّى يُصَلِّيَ رَكْعَتَيْنِ
[(بخاري: التهجد ١١٦٣ – مسلم: صلاة المسافرين وقصرها ٧٠ – (٧١٤)

सहाबी-ए-रसूल, हजरत अबू क़तादा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत हैं, फरमाते हैं: मैं मस्जिद में दखल हुआ तो अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) लोगों के साथ बैठे हुए थे। पास मैं भी जाकर बैठ गया।
अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया : "तुम ने बैठने से पहले दो रक़तें क्यों अदा नहीं कीं ?" मैंने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम), मैंने देखा कि आप और सारे लोग बैठे हुए हैं
(तो मैं भी आकर बैठ गया)। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया : "जब तुम में से कोई शख़्स मस्जिद में दाखिल हो तो वो दो रक़तें अदा करने से पहले हरगिज़ ना बैठे।"

8. नमाज़ के लिए दौड़ कर आना

قال : إِذَا أُقِيمَتِ الصَّلَاةُ فَلَا تَأْتُوهَا تَسْعَوْنَ وَأْتُوهَا تَمْشُونَ وَعَلَيْكُمُ السَّكِينَةُ فَمَا أَدْرَكْتُمْ فَصَلُّوا، وَمَا فَاتَكُمْ فَأَتِمُّوا

مسلم: المساجد ومواضع الصلاة ١٥١ – (٦٠٢)) عن أبي هريرة بخاري: الجمعة ٩٠٨

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
“जब जमात खड़ी हो जाए, तो नमाज़ के लिए दौड़ते हुवे मत आओ बल्की चलते हुवे सुकून व वकार से आओ। फिर जितनी नमाज़ मिल जाए अदा करो और जो रह गई उसे मुकम्मल करो।“

9. ज़बान से नमाज़ की नियत करना

عن أبي هريرة:
أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ الْمَسْجِدَ،
فَدَخَلَ رَجُلٌ، فَصَلَّى، ثُمَّ جَاءَ،
فَسَلَّمَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَرَدَّ النَّبِيُّ ﷺ عَلَيْهِ السَّلَامَ،
فَقَالَ: ارْجِعْ فَصَلِّ فَإِنَّكَ لَمْ تُصَلِّ،
فَصَلَّى، ثُمَّ جَاءَ، فَسَلَّمَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ
فَقَالَ: «ارْجِعْ فَصَلِّ، فَإِنَّكَ لَمْ تُصَلِّ ثَلَاثًا،
فَقَالَ: وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ، فَمَا أُحْسِنُ غَيْرَهُ، فَعَلِّمْنِي
قَالَ: إِذَا قُمْتَ إِلَى الصَّلَاةِ، فَكَبِّرْ ... فذكر الحديث (١)
[بخاري: الآذان ٧٩٣ – مسلم : الصلاة ٤٥ – ٣٩٧)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है,
कि नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मस्जिद में दाख़िल हुवे। एक और शख़्स भी मस्जिद में आया। उसने नमाज पढ़ी और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की खिदमत में हाज़िर हुआ। उसने आप को सलाम किया तो आप ने उसे सलाम का जवाब दिया और फरमाया : वापिस जाओ और दोबारा नमाज अदा करो क्योंकि तुम ने नमाज नहीं पढ़ी। तीन मरतबा ऐसा ही हुआ (चौथी बार) उस शख़्स ने कहा : उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को हक़ के साथ भेजा है, मैं इस से अच्छी नमाज नहीं पढ़ सकता। आप ही मुझे सिखा दीजिए. इस पर आप ने फरमाया : जब तुम नमाज के लिए खड़े हो तो तकबीर कहो। (फिर इसके बाद पूरा वाकिया.... ।)

قال ابن القيم : 1
كان إذا قام إلى الصلاة قال " الله اكبر " ولم يقل فيما قبلها ولا تلفظ بالنية البنة ولا قال أصلى الله صلاة هذا مستقبل القبلة أربع ركعات إماما أو مأموما ولا قَالَ أَدَاءً وَلَا قَضَاءً وَلَا فَرْضَ الْوَقْتِ وهام عشر بدع ثم ينقل عنه أحد قط بإسناد صحيح ولا ضعيف ولا تشي ولا ترسل الحظة واحدة منها البتة بل ولا عن أخر من أصحابه ولا استمنة أحد من التابعين ولا الأئمة الأريمة زاد المعاد ج ١ ص ١٩٤

10. तंग लिबास में नमाज पढ़ना

[قال تعالى : يَا بَنِي آدَمَ خُذُوا زِينَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ **[الأعراف : ٣١**

अल्लाह तआला ने फरमाया :
“ऐ बनी आदम !हर नमाज़ के वक्त अपने आप को (लिबास से) अरस्ता कर लिया करो।”

قال ابن حجر:
ونقل بن حَزْمٍ الاتِّفَاقَ عَلَى أَنَّ الْمُرَادَ سَتْرُ الْعَوْرَةِ
فتح الباري لابن حجر (١/ ٤٦٥) رقم]

इब्ने हज़र (रहिमहुल्लाह) फ़रमाते हैं:
“इब्ने हज़्म ने इस बात पर इत्तिफ़ाक नक़ल किया है कि इस आयत में (ज़ीनत से) मुराद सतर का ढापना है।”

قال : **مَا بَيْنَ السُّرَّةِ والرَّكْبَةِ عَوْرَةٌ** (1)
((حاكم) عن عبد الله بن جعفر – [صحيح الجامع ٥٥٨٣] (حسن)

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
“नाफ़ और घुटनों के दरमियान का हिस्सा औरह (यानी छुपाने की चीज़) है।“

قال الألباني: 1
والمصيبة الثانية: أن البنطلون يحجم العورة وعورة الرجل من الركبة السرة والمصلي يفترض عليه أن يكون أبعد ما يكون عن أن يعصي الله وهو له ساجد الأخطاء الأصلين من ٢٠]

11. एहराम में इज्तिबा की हालत में नमाज पढ़ना

قال :
لا يُصَلِّي أَحَدُكُمْ
في الثَّوْبِ الوَاحِدِ لَيْسَ عَلَى عَاتِقَيْهِ شَيْءٌ
بخاري: الصلاة ٣٥٩ – مسلم: الصلاة ٢٧٧ – (٥١٦) عَنْ أَبِي هُرَيْرَة

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
“तुम में से कोई शख़्स एक कपड़े में है, इस हाल में नमाज़ ना पढ़े कि उसके कंधों पर (ढापने के लिए) कुछ भी ना हो।”

12. तसवीर वाले लिबास में नमाज़ पढ़ना

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا
أَنَّهَا اشْتَرَتْ نُمْرُقَةً فِيهَا تَصَاوِيرُ
فَقَامَ النَّبِيُّ بِالْبَابِ فَلَمْ يَدْخُلْ
فَقُلْتُ: أَتُوبُ إِلَى اللَّهِ مِمَّا أَذْنَبْتُ؟

قَالَ: مَا هَذِهِ التَّمْرُقَةُ؟ قُلْتُ: لِتَجْلِسَ عَلَيْهَا وَتَوَسَّدَهَا !
قَالَ: إِنَّ أَصْحَابَ هَذِهِ الصُّوَرِ يُعَذَّبُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ!
يُقَالُ لَهُمْ: أَحْيُوا مَا خَلَقْتُمْ، وَإِنَّ الْمَلَائِكَةَ لَا تَدْخُلُ بَيْتًا فِيهِ الصُّورَةُ.
[بخاري : اللباس ٥٩٥٧ مسلم: اللباس والزينة ٣٩٤١

हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से रिवायत है कि
उन्होन ने नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिए एक छोटा सा तकिया ख़रीदा जिस पर तसवीर बनी हुई थी। जब नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तशरीफ़ लाए तो आप दरवाज़े पर ही रुक गए और अंदर घर में दाख़िल न हुए।
हज़रत आयशा ने अर्ज़ किया : (ऐ अल्लाह के रसूल,) मैं अल्लाह के हुज़ूर तौबा करती हूं, मुझसे क्या गलती हो गई ? आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया : तसवीर वालों को क़ियामत के दिन अज़ाब दिया जाएगा। उन से कहा जाएगा अपनी बनाई हुवी तसवीरों को अब ज़िंदा भी कर के दिखा दो ! और फ़रिश्ते हमारे घर में दाख़िल नहीं होते
जिस में (किसी जानदार की) तसवीर हो।

عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ:
قَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يُصَلِّي
فِي خَمِيصَةٍ ذَاتَ أَعْلَامٍ، فَنَظَرَ إِلَى عَلَمِهَا
فَلَمَّا قَضَى صَلَاتَهُ قَالَ:
اذْهَبُوا بِهَذِهِ الْخَمِيصَةِ إِلَى أَبِي جَهْمِ بْنِ حُذَيْفَةَ وَائْتُونِي بِأَنْبِجَانِيهِ، فَإِنَّهَا أَلْهَتْنِي آنِفًا فِي صَلَاتِي. (1)
بخاري: الصلاة: ٣٧٣ – مسلم المساجد ومواضع الصلاة : ٦٢ – (٥٥٦)] واللفظ المسلم

हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से रिवायत है, फ़रमाती हैं:
अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) खड़े हुए और नमाज़ पढ़ने लगे। आपने एक ऐसा कुर्ता पहन रखा था जिसमें नक्श ओ निगार बने हुए थे। आप की निगाह एक नुक़ूश पर पड़ी। जब आप नमाज़ से फारिग हुए तो आप ने फरमाया : ये कुर्ता अबू जहम बिन हुजैफा के पास ले जाओ, और उनके पास से मेरे लिए उन का सादा कुर्ता ले आओ।
इसलिए कि इसके नुक़ूश ने मुझे नमाज़ में अपनी तरफ से मशगुल कर दिया है।

1 قالت اللجنة الدائمة: لا يجوز التعلم أن يصلي بملابس فيها صور ذوات الأرواح من إنسان وحيوان وطيور وغيرها وإن صلى بها فالصلاة صحيحة مع الإثم في حل من علم الحكم الشرعي، الفتاوى اللجنة الدائمة)) ٢ – (١٤٢/٥)

13. नमाज़ में इस्बाल करना

قال :
مَنْ أَسْبَلَ إِزَارَهُ فِي صَلَاتِهِ خُيَلَاءَ فَلَيْسَ مِنَ اللَّهِ فِي حِلٍّ وَلَا حَرَامٍ (1) (ابو داود) عن ابن مسعود صحيح (الجامع ٢٠١٢) صحيح

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
जो शख़्स नमाज़ में अकड़ के तौर पर अपना तहबंद (टख़नों से नीचे) लटकाए, उसके लिए अल्लाह की तरफ से ना (जन्नत) हलाल है ना (जहन्नम) हराम।

قال :
وَارْفَعْ إِزَارَكَ إِلَى نِصْفِ السَّاقِ فَإِنْ أَبَيْتَ فَإِلَى الْكَعْبَيْنِ وَإِيَّاكَ وَإِسْبَالَ الْإِزَارِ فَإِنَّهَا مِنَ الْمَخِيلَةِ وَإِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمَخِيلَةَ) (ابو داود) عن جابر بن سليم، صحيح الجامع (٧٣٠٩] (صحيح

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
अपना तहबंद ऊंचा कर, निस्फ पिंडली तक, अगर तू ये ना करना चाहे तो टखनों तक। और ख़बरदार तहबंद को (टख़नों से नीचे) मत लटका, क्योंकि ये चीज़ अकड़ (की अलामत) है और अल्लाह को अकड़ पसंद नहीं है।

قال العينية 1
معنى الحديث: من أسبل إزاره في صلاته الخيلاء فليس هو عند الله في شيء، ولا يعبا الله به ولا بصلاته
[(١٧٠/٣) شرح أبي داود العيني)
قال المناوي:
وقيل معناه لا يؤمن خلال الله وحرامه قال النووي: معناه برى من الله وفارق دينه فيض القدير حديث ٨٣٩٩
قال أبو الحسن الندية
وقولها في حل ولا حرام أي في أن يجعله في حل من الذنوب وهو أن يغفر له، ولا في أن يمنعه ويحفظه من سوء الأعمال أو في أن يحل له الجنة وفي
أن يحرم عليه النار إفتح الوجود في شرح سنن أبي دلوه (٤٠٤/١)]

14. नमाज़ में कपड़े समेटना या मोड़ना

قال :
أُمِرْنَا أَنْ نَسْجُدَ عَلَى سَبْعَةِ أَعْظُمٍ
وَلَا نَكُفَّ ثَوْبًا وَلَا شَعَرًا (1)
بخاري: الأذان ٨١٢ مسلم: الصلاة ٢٢٨ – (٤٩٠)) عن ابن عباس واللفظ للبخاري

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
हमें सात हड्डियों पर सजदे का हुक्म दिया गया है, और ये भी कि हम कपड़े और बाल न समेटें।

15. नमाज़ में सूतरा का एहतमाम न करना

قال :
لا تُصَلِّ إِلَّا إِلَى سُتْرَةٍ

(ابن حبان، ابن خزيمه عن ابن عمر أصل فقة صلاة النبي ج ١ ص ١١٠] (صحيح

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
नमाज़ न पढ़ मगर सुत्रे की तरफ।

ا قال النووي : اتفق العلماء على النهي عن الصلاة ودولة مفكر أو الله أو الحلوة ....
فلو صلى كذلك فقد أساء وصحت صلاة واحتج في ذلك أبو جعفر محمد بن جرير الطبري بإجماع العلماء وسكي بن الكادر الإعادة فيه عن الحسن البصري في مذهب الجمهور أن النهي مطلقا لِمَنْ صَلَّى كذلك سواء العداء السلام أم كان قبلها كذلك لا ما بل المعلى أخر شرح النووي على مسلم (٢٠٩/٤)

قال :
إِذَا صَلَّى أَحَدُكُمْ فَلْيُصَلِّ إِلَى سُتْرَةٍ وَلْيَدْنُ مِنْهَا وَلَا يَدَعْ أَحَدًا يَمُرُّ بَيْنَ يَدَيْهِ فَإِنْ جَاءَ أَحَدٌ يَمُرُّ فَلْيُقَاتِلْهُ فَإِنَّهُ شَيْطَانٌ
(ابو داود، ابن ماجه ابن حبان، بيهقي عن أبي سعيد واللفظ لابن ماجه.
صحيح الجامع ٦٥١) (صحيح

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
जब तुम में से कोई शख़्स नमाज़ पढ़े तो उसे चाहिए कि सुत्रे की तरफ़ नमाज़ पढ़े और सुत्रे से करीब हो जाए। और किसी को अपने सामने से जाने ना दे। और अगर कोई जाने ही लगे तो उसे रोकने के लिए उससे लड़े क्योंकि वो शैतान है।

16. क़ुदरत के बावजूद फ़र्ज़ नमाज़ बैठ कर पढ़ना

عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ له
قَالَ كَانَتْ بِي بَوَاسِيرُ فَسَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ عَنْ الصَّلَاةِ فَقَالَ صَلِّ قَائِمًا فَإِنْ لَمْ تَسْتَطِعْ فَقَاعِدًا (1) فَإِنْ لَمْ تَسْتَطِعْ فَعَلَى جَنْبٍ[بخاري: الجمعة ١١١٧

इमरान बिन हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है, फरमाते हैं:
मुझे बवासीर का मर्ज था. मैंने नबी करीम (सल्लल्लाहु अलाहि व सल्लम) से नमाज के बारे में पूछा, तो आप ने फरमाया : खड़े हो कर नमाज़ पढ़ो, अगर ना हो सके तो बैठ कर पढ़ो, और अगर ये भी ना हो सके तो करवा पर (यानी लेट कर) नमाज़ पढ़ो।

1 قال ابن حجر: استدل به من قال لا ينتقل المريض إلى القعود إِلَّا بَعْدَ عَنْهِ الْقُدْرَةِ عَلَى الْقِيَامِ
وقد شكل عياض عن الشافعي وعن مالك وأحمد وإسحاق لا يشترط العلم من وجود المشقة افتح الباري لابن سمر)] (٢) ٥٨٨

17. नमाज़ में हाथ छोड़ना या नाफ़ के नीचे बंधना

عَنْ وَائِل بْنِ حُجْرٍ قَالَ :
صَلَّيْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ
وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى يَدِهِ الْيُسْرَى عَلَى صَدْرِهِ
(صحيح ابن خزيمة ٤٧٩) (صحيح)

वायल इब्न हुज्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) फरमाते हैं:
मैं ने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ नमाज पढ़ी। आप ने अपना दाहिना हाथ अपने बाए हाथ पर सीने पर रखा।

18. रुकू' से क़बल वा बाद और तशहुद से खड़े होकर रफ़उल यदैन करना

عَنْ نَافِعٍ
أَنَّ ابْنَ عُمَرَ
كَانَ إِذَا دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ
وَإِذَا رَكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ
وَإِذَا قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَفَعَ يَدَيْهِ
وَإِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ رَفَعَ يَدَيْهِ
[وَرَفَعَ ذَلِكَ ابْنُ عُمَرَ إِلَى نَبِيِّ اللَّهِ ﷺ]: الآذان ٧٣٩

नाफ़े' रहिमहुल्लाह से रिवायत है कि
(अब्दुल्लाह) बिन उमर जब नमाज़ में दाख़िल होते तो तकबीर कहते और रफ़ुल यदैन करते। फिर जब रुकू' करते तो रफ़ुल यदैन करते , और जब समीअल्लाहु लिमन हमीदा कहते तब भी रफ़ुल यदैन करते और जब दो रकअतों के बाद (अत्तहियात से) खड़े होते तब भी रफ़ुल यदैन करते और इब्ने उमर ने इस (अमल) को नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की तरफ मंसूब किया है।

19. इमाम के पीछे सूरह फ़ातिहा न पढ़ना

قال :
لا صَلاةَ لِمَنْ لَمْ يَقْرَأْ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ.
خ: الأذان ٧٥٦ – م: الصلاة ٣٤ – (٣٩٤)) عن عبادة

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
जिस ने सूरह फातिहा न पढ़ी उस की नमाज नहीं।

20. इमाम वा मुक़्तदी का जहरी नमाज़ में सिर्न आमीन कहना

عَنْ وَائِل بْن حُجْرٍ
أَنَّهُ صَلَّى خَلْفَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَجَهَرَ بِآمِينَ
(د)) [د بتحقيق الألباني (٩٣٣) حسن صحيح)

वैल इब्न हुज्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) फरमाते हैं कि :
उन्हों ने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पीछे नमाज पढ़ी तो आप ने जहर से आमीन कहा।

عن بن جريج عن عطاء قال :
قُلْتُ لَهُ : أَكَانَ بْنُ الزُّبَيْرِ
يُؤْمِنُ عَلَى إِثْرِ أُمِّ الْقُرْآنِ؟ قَالَ نَعَمْ وَيُؤَمَّنُ مِنْ وَرَاءِهِ حَتَّى أَنَّ لِلْمَسْجِدِ لَلَجَّةٌ
مصنف عبد الرزاق : ٢٦٤٠]
رواه البخاري تعليقا كتاب صفة الصلاة : ٢٩ – باب جهر الإمام بالتأمين
تمام المئة ص ١٧٨ – الضعيفة ج ٢ ص ٣٦٨-٣٦٩ وصححه الألباني]

इब्न ए जुरैज अता से रिवायत करते हैं, फरमाते हैं:
मैंने उन से (यानी हज़रत अता से) पूछा : क्या इब्न ए जुबैर उम्मुल क़ुरआन (यानी सूरतुल फ़ातिहा) के इख़्तिताम पर आमीन कहते थे ? अनहोन ने फरमाया : हां, और जो उनके पीछे होते वो भी आमीन कहते हत्ता कि मस्जिद गूंज उठती ।

21. नमाज में यहां वहां देखना

عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ
سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ
عَنْ الالْتِفَاتِ فِي الصَّلَاةِ
فَقَالَ: هُوَ اخْتِلَاسٌ (1)
يَخْتَلِسُهُ الشَّيْطَانُ مِنْ صَلَاةِ الْعَبْدِ] [بخاري: الأذان: ٧٥١

हज़रत आयशा [] से रिवायत है,
कि मैंने नमाज में यहां वहां मुतवज्जह होने के बारे में कहा, मैं अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से पुचा तो आप ने फरमाया : ये वो हिसाब है जो बंदे की नमाज में से शैतान उचक ले जाता है

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ
دَخَلَ رسولُ الله ﷺ الكَعْبَةَ

ما خَلَفَ بَصَرُهُ مَوْضِعَ سُجُودِهِ حَتَّى خَرَجَ مِنْهَا .
(ابن خزيمه بيهقي، حاكم الإرواء ج ٢ ص ٧٣] (صحيح

हज़रत आयशा से रिवायत है, फरमाती हैं:
अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)(नमाज़ के लिए) काबा में दाख़िल हुए, तो आप की निगाह सजदे की जगह पर टिकी रह रही है यहाँ तक कि आप बाहर तशरीफ ले आएं।

قال القاري: فقال: (هو) أي: الالتفات (المتلاس) : المتعال من الكلس وهو الكلب، أي: استلاب واحد 1 بسرعة وقيل شيء يختلس به مرقاة
(المفاتيح شرح مشكاة المصابيح (٧٨١/٢

عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ إِذَا قَعَدَ فِي التَّشَهُّدِ وَضَعَ كَفَّهُ الْيُسْرَى عَلَى فَخِذِهِ الْيُسْرَى (وَأَشَارَ بِالسَّبَّابَةِ لَا يُجَاوِزُ بَصَرُهُ إِشَارَتَهُ (نسائی) [نسالي بتحقيق الألباني (١٢٧٥] (حسن صحيح

अब्दुल्ला बिन ज़ुबैर से रिवायत है,
कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जब तशहुद में बैठे तो हथेलियों को बाएइन रान प्रति रखते और (दाएं हाथ की) सब्बाबा से इशारा करते। आप की नजर आप के (नाखूनों के) इशारे पर टिकी रहती हैं।

22. नमाज में आंखें बंद कर लेना

قال ابن القيم :
وَلَمْ يَكُنْ مِنْ هَدْيِهِ تَغْمِيضُ عَيْنَيْهِ فِي الصَّلَاةِ (1)
[زاد المعاد: ج ١ ص ٢٨٣

इब्ने क़य्यिम رحمه الله फ़रमाते हैं:
नमाज में आंखें बंद कर लेना नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का तरीक़ा नहीं था।

23. नमाज़ में आसमान की तरफ देखना

قال :
إذا كان أَحدُكُم فِي الصَّلاةِ
فَلَا يَرْفَعْ بَصَرَهُ إِلَى السَّمَاءِ أَنْ يَلْتَمِعَ بَصَرُهُ
((مسند احمد، نسائي) عن رجل من الصحابة [صحيح الجامع ٧٤٩] (صحيح

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
जब तुम में से कोई शख़्स नमाज़ में हो तो वो आसमान की तरफ निगाह उठा कर ना देखे। कहीं ऐसा ना हो कि उसकी बीनाई चौंधिया जाए।

قال الشيخ الفوزان: 1
ذكر الفقهاء أن مما يكره في الصلاة تغميض عينيه، إلا إذا كان في ذلك الغرض صحيح، كأن يكون أمامه ما يشغله فإنه لا بأس بإغماض عينيه عن ذلك الشيء الذي يشغله أما تخاذ الحماض العينين في الصلاة عادة ولو لم يكن أمامه ما يشغله، هذا يكره. [مجموع فتاوى فضيلة الشيخ صالح بن فوران (١/ ٢٦٤)

24. नमाज़ में बेजा हरकत करना

[قال تعالى : قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ خَاشِعُونَ [المؤمنون ١، ٢

अल्लाह तआला फरमाया :
ईमान वाले कामयाब हो गए. ये वो लोग हैं जो अपनी नमाज़ों में ख़ुशूअ् इख़्तियार करते हैं।

عن ابن عباس خَاشِعُونَ { خَائِفُونَ سَاكِنُونَ وَكَذَا رُوِيَ عَنْ مُجَاهِدٍ وَالْحَسَنِ وَقَتَادَةَ وَالزُّهْرِي [تفسير ابن كثير]

इब्न ए अब्बास से रिवायत है कि (ख़ाशिऊं) से मुराद ख़ैफून और सकीनूं है। यानी अल्लाह से डरने वाले और सुकून वाले। मुजाहिद, हसन बसरी, क़तादा और ज़ुहरी से भी इसी तरह मरवी है।

عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّهُ رَأَى رَجُلًا يُحَرِّكُ الْحَصَى بِيَدِهِ وَهُوَ فِي الصَّلَاةِ فَلَمَّا انْصَرَفَ قَالَ لَهُ عَبْدُ اللَّهِ : لا تُحَرِّكُ الْحَصَى وَأَنْتَ فِي الصَّلَاةِ فَإِنَّ ذَلِكَ مِنَ الشَّيْطَانِ (1) نسائي: التطبيق ١١٦٠] [التعليقات الحسان (صحيح) [١٩٤٤]

अब्दुल्ला बिन उमर से रिवायत है कि उनहों ने एक शख़्स को देखा कि जो नमाज़ ही पढ़ रहा है, उसके हाथ में कंकरियां को हरकत दे रहा है। हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर ने हमसे कहा : नमाज़ में कंकरियों को हरकत न दो, क्योंकि ये चीज़ शैतान की तरफ से है।

عن علي بن عبد الرحمن المعاوي أنه قال: رأني عبد الله بن عمر وأنا أغبت بالحصى في الصلاة فلما الصرف لهاي فقال: صنعُ كَمَا كَانَ رَسُولُ الله صلى الله عليه وسلم يضع، فقلت: وكيف كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يصنع قال: «كان إذا جلس في الصلاة وضع كُلَّهُ الْيُمْنَى عَلَى فضله اليمنى، وقبض أصابعه كلها وأشار بإصبعه التي على الإبهام، ووضع كلة البشرى على فيلم المشرعية [مسلم: المساجد ومواضع الصلاة
□□□(- □□□)]

25. नमाज़ में पढ़ी जाने वाली क़िरात वा अज़कार के मानी

न सीखना

قال : مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَتَوَضَّأُ فَيُسْبِغُ الْوُضُوءَ ثُمَّ يَقُومُ فِي صَلَاتِهِ فَيَعْلَمُ مَا يَقُولُ إِلَّا انْفَتَل كَيَوْمِ وَلَدَتْهُ أُمُّهُ مِنَ الْخَطَايَا لَيْسَ عَلَيْهِ ذَنْبٌ. (حاكم) [صحيح الترغيب ٥٤٦] (صحيح)

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
जो भी मुसलमान कामिल वुज़ू करता है, फिर नमाज में खड़ा होता है, और जो कुछ पढ़ता है उसे समझता भी है तो नमाज से फारिग होकर वो गुनाहों से इस तरह पाक लौटता है जैसे उस दिन था जब उसकी मां ने उसे जन्म दिया था। उस पर कोई गुनाह नहीं होता।

26. नमाज में ध्यान ना देना

وقال زكريا عا العام لقومه : وَإِنَّ اللَّهَ أَمَرَكُمْ بِالصَّلَاةِ فَإِذَا صَلَّيْتُمْ فَلَا تَلْتَفِتُوا فَإِنَّ اللَّهَ يَنْصِبُ وَجْهَهُ لِوَجْهِ عَبْدِهِ فِي صَلَاتِهِ مَا لَمْ يَلْتَفِتْ (مسند احمد، تاريخ كبير، ترمذى، نسائى، ابن حبان حاكم عن الحارث ابن الحارث الأشعري. صحيح الجامع ١٧٢٤] (صحيح)

हज़रत ज़करिया عليه السلام ने अपनी कौम को हिदायत करते हुए कहा था :
अल्लाह ताला ने तुम्हें नमाज का हुक्म दिया है। जब तुम नमाज अदा करो तो यहां वहां मुतवज्जिह न होना, इस लिए कि बंदा जब नमाज में होता है तो अल्लाह तआला का चेहरा बंदे के चेहरे के बिल्कुल सामने होता है जब तक कि बंदा खुद ही दूसरी तरफ मुतवज्जिह न हो।

27. रुकु और सुजूद में पीठ सीधी न रखना

قال : لا تُجْزِئُ صَلَاةُ الرَّجُلِ حَتَّى يُقِيمَ ظَهْرَهُ فِي الرَّكُوعِ وَالسُّجُودِ (1) (مسند احمد، ابو داود، ترمذى، نسائى، ابن ماجه) عن أبي مسعود . صحيح الجامع ٧٢٢٤) (صحيح)

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
बंदे की नमाज़ ही नहीं होती जब तक कि वो रुकु' और सजदे में अपनी पीठ सीधी ना रखे।

قال : لَا يَنْظُرُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ إِلَى صَلَاةِ عَبْدٍ لَا يُقِيمُ فِيهَا صُلْبَهُ بَيْنَ رُكُوعِهَا وَسُجُودِهَا (مسند احمد) عن طلق بن علي الحنفي الصحيحة ٢٥٣٦] (إسناده جيد)

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
अल्लाह तआला हमें बंदे की नमाज़ की तरफ देखता भी नहीं जिसमें बंदा रुकू' और सुजूद के दरमियान अपनी पीठ सीधी न रखे।

1 قال يا معشر المسلمين لا صلاة لمن لا يقيم مثله في الركوع والسجود
[(ابن ماجعه) عن علي بن شيان (صحيح) (صحيح الجامع ٧٩٧٧

28. जल्दी जल्दी रुकू’ और सुजूद करना

عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مُغَفَّلٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ : أَسْرَقُ النَّاسِ مَنْ يَسْرِقُ صَلَاتَهُ قِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَكَيْفَ يَسْرِقُ صَلَاتَهُ؟
قَالَ : لا يُتِمُّ رُكُوعَهَا وَلَا سُجُودَهَا (طبراني في الأوسط) عن عبد الله بن مغفل . صحيح الجامع ٩٦٦ (صحيح))

हजरत अब्दुल्ला बिन मुगफ्फल से रिवायत है, फरमाते हैं:
अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
बद-तरीन चोर कौन है जो अपनी नमाज़ में चोरी करे। लोगों ने अर्ज़ किया : आए अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम), आदमी अपनी नमाज़ में से कैसे चोरी कर सकता है? आप ने फरमाया : वो नमाज में रुकू’ और सुजूद ठीक से ना करे।

عَنْ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ، وَخَالِدِ بْنِ الْوَلِيدِ، وَيَزِيدَ بْنِ أَبِي سُفْيَانَ، وَشُرَحْبِيلَ بْنِ حَسَنَةَ صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِأَصْحَابِهِ ثُمَّ جَلَسَ فِي طَائِفَةٍ مِنْهُمْ فَدَخَلَ رَجُلٌ، فَقَامَ يُصَلِّي، فَجَعَلَ يَرْكَعُ وَيَنْقُرُ فِي سُجُودِهِ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «أَتَرَوْنَ هَذَا، مَنْ مَاتَ عَلَى هَذَا مَاتَ عَلَى غَيْرِ مِلَّةِ مُحَمَّدٍ، يَنْقُرُ صَلَاتَهُ كَمَا يَنْقُرُ الْغُرَابُ الدَّمَ، إِنَّمَا مَثَلُ الَّذِي يَرْكَعُ وَيَنْقُرُ فِي سُجُودِهِ كَالْجَائِعِ لا يَأْكُلُ إِلَّا التَّمْرَةَ وَالتَّمْرَتَيْنِ ، فَمَاذَا تُغْنِيَانِ عَنْهُ.
(طبراني، ابو يعلى، ابن خزيمه واللفظ له) [صحيح ابن خزيمة ٦٦٥، صحيح الترغيب ٥٢٨] (حسن)

हज़रत अम्र बिन आस, ख़ालिद बिन वलीद, यज़ीद बिन अबी सुफ़ियान, शुरहबील बिन अबी हसनाह से रिवायत है की,
अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपने सहाबा के साथ नमाज अदा की। फिर आप बाज़ सहाबा के साथ बैठे रहेंगे। एक शख़्स मस्जिद में दाख़िल हुआ और नमाज़ पढ़ने लगा। हमें शाखों ने रुकु’ किया और जल्दी-जल्दी सजा दी। क्या पर अल्लाह के नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया : क्या शेखों को देख रहे हो? जो शख़्स इस हाल में मारे वो मिल्लत ए मुहम्मदिया पर नहीं मारा। जो नमाज़ में इस तरह थोंग लगता है जैसे कव्वा खून में थोंग लगता है। हमारे शाखों की मिसाल जो रुकु’ और सज्दों में थोंग लगे, हमें भूखे आदमी की तरह है जो एक दो खजूर खा ले, (एक दो खजूरों से) से उसकी भूख क्या मिटेगी।

29. सजदे में ज़मीन पर बाज़ू बिछाना

قال :
اعْتَدِلُوا فِي السُّجُودِ (1)
وَلَا يَبْسُطْ أَحَدُكُمْ ذِرَاعَيْهِ انْبِسَاطَ الْكَلْبِ
بخاري: الآذان ٨٢٢ – مسلم: الصلاة ٢٣٣ – (٤٩٣) عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
सज्दों में एतेदाल इख्तियार करो, और तुम में से कोई शख़्स (सजदे में) अपने बाज़ू कुत्ते की तरह ना

बिछाए।

قال : إِذَا سَجَدْتَ فَضَعْ كَفَّيْكَ وَارْفَعْ مِرْفَقَيْكَ [مسلم: الصلاة ٢٣٤ – (٤٩٤)) عَنْ الْبَرَاءِ

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
जब तू सजदा करे तो अपनी हथेलीयां जमीन पर रख दे और कोहनी उठा ले।

30. सजदे में हाथों की उंगलियां खुली रखना

أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ إِذَا سَجَدَ ضَمَّ أَصَابِعَهُ
ابن خزيمه، ابن حبان حاكم أصل صفة صلاة النبي ﷺ ج ٢ ص ٧٢٦] صحيح ابن خزيمة (٦٤٢) صحيح))

वायल से रिवायत है कि
अल्लाह के नजीब सजदा करते हैं तो हाथों की उंगली समेट लेते हैं।

ا قال : إذا سجد أحدكم فليعدل ولا يعترض ذراعيه المراض الكلب
) مسند احمد، ترمذى، ابن ماجه، ابن خزيمة الضياء) عن جابر . (صحيح) (صحيح الجامع ٥٩٦]
2 قال ابن حجر: قولة اعتدلوا أبي كولوا متوسطين بين الافتراضي والقنص وقال بن دقيق العيد لعان المراد بالاعتدال لهنا وضع هيئة السجود على وقع الأثر لأن الاعتدال المشي المطلوب في المرفوع لا يتأتى لهذا فإنه هناك استواء الظهر والحر والمطلوب ها ارتفاع الأسافل على الأعالي افتح الباري

31. दूसरी और चौथी रकत की शुरुआत में जलसा ए इस्तिराहत न करना

عن مَالِكِ بْنُ الْحَوَيْرِثِ اللَّيْثِي أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ يُصَلِّي فَإِذَا كَانَ فِي وِتْرٍ مِنْ صَلَاتِهِ لَمْ يَنْهَضْ حَتَّى يَسْتَوِيَ قَاعِدًا.

[ح: كتاب الأذان ٨٢٣]

मालिक बिन हुवैरिस फ़रमाते हैं कि :
उनहों ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को नमाज पढ़ते देखा। जब तक ऐप अपनी नमाज की ताक रकतों में न हो जाए, हमें वक्त तक खड़े नहीं होते, जब तक कि ठीक से बैठ नहीं जाते।

32. क़ियाम के लिए उठे वक़्त ज़मीन पर एतेमाद न करना

عَنْ أَبِي قِلَابَةَ قَالَ
جَاءَنَا مَالِكُ بْنُ الْحَوَيْرِثِ

فَصَلَّى بِنَا فِي مَسْجِدنَا هَذَا
فَقَالَ إِنّي لَأُصَلِّي بِكُمْ وَمَا أُرِيدُ الصَّلَاةَ
وَلَكِنْ أُرِيدُ أَنْ أُرِيكُمْ كَيْفَ رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يُصَلِّي
قَالَ أَيُّوبُ : فَقُلْتُ لِأَبِي قِلَابَةَ : وَكَيْفَ كَانَتْ صَلَاتُهُ ؟
قَالَ مِثْلَ صَلَاةِ شَيْخِنَا هَذَا – يَعْنِي عَمْرِو بْنَ سَلِمَةَ –
قَالَ أَيُّوبُ : وَكَانَ ذَلِكَ الشَّيْخُ يُتِمُّ التَّكْبِيرَ (1) وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ عَنِ السَّجْدَةِ الثَّانِيَةِ جَلَسَ
وَاعْتَمَدَ عَلَى الْأَرْضِ ثُمَّ قَامَ
[خ: كتاب الأذان ٨٢٤

अबू क़िलाबा (रज़ियल्लाहु अन्हु) फरमाते हैं कि :
हमारे पास मालिक बिन हुवैरिस आए और हमने इसी मस्जिद में नमाज भी पढ़ीं। उन्होन ने कहा : मैं तुम्हें नमाज पढ़ाऊं गा और मेरा इरादा महेज इबादत का नहीं। बाल्की मैं चाहता हूं कि तुम को दिखाऊं कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) किस तरह नमाज पढ़ते हैं।
अय्यूब कहते हैं कि मैंने अबू क़िलाबा से कहा कि उनकी (यानी मालिक बिन हुवैरिस की) नमाज़ कैसी थी ? अबू किलाबा ने कहा हमारे शेख अम्र बिन सलामा की तरह।
अय्यूब कहते हैं कि वो शेख़ तकबीर पूरी किया करते थे। और जब दूसरे सजदे से सर उठते तो बैठ जाते और जमीन पर एतमाद करके (यानी जमीन पर हाथ टिकाकर) खड़े होते।

1 أي يستولي عددها، ويأتي بتمامها، ولا ينقص منها شيئًا، فيض الباري رقم ٨٢٤]

33. नमाज़ बा जमात में सफ़ें सीधी न करना

قال : لَتُسَوُّنَّ صُفُوفَكُمْ أَوْ لَيُخَالِفَنَّ اللَّهُ بَيْنَ وُجُوهِكُمْ (1)
[بخاري: الآذان: ٧١٧ – مسلم: الصلاة: ٦٥٩

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
तुम ज़रूर अपने सफ़ों को सीधा करो, वरना अल्लाह तआला तुम्हारे चेहरे (यानी तुम्हारे दिलों) में इख़्तेलाफ़ अदा कर देगा।

34. सफ़न में बाहम फ़सला राखना

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ النَّبِيِّ قَالَ أَقِيمُوا صُفُوفَكُمْ فَإِنِّي أَرَاكُمْ مِنْ وَرَاءِ ظَهْرِي وَكَانَ أَحَدُنَا يُلْزِقُ مَنْكِبَهُ بِمَنْكِبِ صَاحِبِهِ وَقَدَمَهُ بِقَدَمِهِ
[[بخاري: الآذان ٧٢٥

अनस बिन मालिक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) करेन से रिवायत करते हैं
आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हम से फरमाया ;
अपनी सफें सीधी कर लो, इसलिए कि मैं अपने पीछे से तुम्हें देखता हूं।

फरमाते हैं: हम में से हर शख़्स अपना कंधा अपने साथी के कंधों से और अपना कदम अपने साथी के कदम से जोड़ लेता था।

قال : لَا تَذَرُوا فُرُجَاتٍ لِلشَّيْطَانِ
(مسند احمد ابو داود، طبراني) عن ابن عمر .
(صحيح الجامع ١١٨٧ – الصحيحة ٧٤٣] (صحيح

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
शैतान के लिए (सफों में) खाली जगहें मत छोड़ो।

ولفظ أبي داود: 1
والله القيم صفوفكم أو ليخالف الله بين قلوبكم (ابو داود عن الأعمال بن بشير. [صحيح الجامع (١١٩) (صحيح) وفي رواية: الشئون الصفوفكم في صلاتكم أو أبدا الفن الله بين قلوبكم (مسند احمد، طبراني عن النعمان بن بشير صحيح الجامع ٥٠٧٠) (صحيح

35. सफफ से अलग नमाज पढ़ना

عن وابصة أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ رَأَى رَجُلًا يُصَلِّي خَلْفَ الصَّفِ وَحْدَهُ فَأَمَرَهُ أَنْ يُعِيدَ
((مسند احمد ابو داود، ترمذي المشكاة ١١٠٥] (صحيح

वबीसा से रिवायत है कि
अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने एक शख़्स को सफ़ के पीछे अकेले नमाज पढ़ते देखा तो आप ने उसे नमाज दोहराने का हुक्म दिया।

ولفظ ابن حبان: قال : فَأَعِدْ صَلَاتَكَ،
فَإِنَّهُ لَا صَلَاةَ لِفَرْدٍ خَلْفَ الصَّفِّ وَحْدَهُ. (1)
((ابن حبان) [التعليقات الحسان ٢٢٠٠) (صحيح

इब्न ए हिब्बान के अल्फ़ाज़ हैं:
आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया : अपनी नमाज दोहराओ, इस लिए उस शख़्स की नमाज नहीं जो सफफ से पीछे अकेले ही नमाज पढ़ ले।

36. अगली सफफ मुकम्मल होने से क़बल सफ बनाना

قال : أتموا الصَّفَ الْأَوَّلَ ثُمَّ الَّذِي يَلِيهِ وَإِنْ كَانَ نَقْصُ فَلْيَكُنْ فِي

الصَّفِ الْمُؤَخَّرِ.

[مسند احمد، نسائي) عن أنس نسائي، بتحقيق الألباني ٨١٨ (صحيح)]

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
पहले अगली सफ्फ को मुकम्मल करो, फिर उसके बाद वाली सफ्फ को। सफ्फ में कमी सिर्फ आखिरी सफ्फ में रहे।

وفي رواية قال : استقبل صلاتك، لا صلاة الذي خلف الصف 1
[(عن ابن ماجه ابن حبان) عن علي بن شيبان (صحيح) (صحيح الجامع ٩٤٩

37. बच्चों को पहली सफ्फ में खड़ा करना

قال : لِيَلِنِي مِنْكُمْ أُولُو الْأَحْلَامِ وَالنُّهَى ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ
عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ
(مسلم: الصلاة ١٢٢ – (٤٣٢

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
सफ़ में मुझसे क़रीब वो लोग हों जो बालिग़ हों, समझदार हों। फिर जो उनसे करीब हों, फिर जो उनसे करीब हों।

38. इमाम के आने से पहले खड़े हो जाना

قال : إِذَا أُقِيمَتِ الصَّلَاةُ فَلَا تَقُومُوا حَتَّى تَرَوْنِي قَدْ خَرَجْتُ
[(بخاري: الآذان ٦٣٧ – مسلم: المساجد ومواضع الصلاة ١٥٦ – (٦٠٤

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
जब नमाज की इकामत हो तो खड़े मत हो जब तक देख न लो कि मैं अपने कमरे से निकल कर (मस्जिद में) आ गया हूं।

39. इमाम से पहले आमीन कहना

قال : إِذَا أَمَّنَ الْإِمَامُ فَأَمِّنُوا فَإِنَّهُ مَنْ وَافَقَ تَأْمِينُهُ تَأْمِينَ الْمَلَائِكَةِ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ
بخاري: الأذان ٧٨٠ – مسلم الصلاة ٧٢ – (٤١٠) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
जब इमाम आमीन कहें तो तुम भी आमीन कहो, इस लिए कि जिसकी आमीन फरिश्तों की आमीन के

मुवाफिक हो जाए उसके पीछले तमाम गुनाह मुआफ हो जाते हैं।

40. इक़ामत के वक़्त भी सुन्नत व नफ़ल में मशगूल होना

قال : إِذَا أُقِيمَتْ الصَّلَاةُ فَلَا صَلَاةَ إِلَّا الْمَكْتُوبَةُ.
. مسلم: صلاة المسافرين وقصرها ٦٣ – (٧١٠) ، ٦٤ – (٧١٠)] عن أبي هريرة

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
जब नमाज की इकामत हो जाए तो सिवाय फर्ज नमाज के कोई और नमाज नहीं।

عَنْ ابْنِ بُحَيْنَةَ قَالَ أُقِيمَتْ صَلَاةُ الصُّبْحِ فَرَأَى رَسُولُ اللَّهِ رَجُلًا يُصَلِّي وَالْمُؤَذِّنُ يُقِيمُ فَقَالَ: أَتُصَلِّي الصُّبْحَ أَرْبَعًا؟
بخاري: الآذان ٦٦٣ – مسلم: صلاة المسافرين وقصرها ٦٦ – (٧١١)] واللفظ المسلم

इब्न ए बुहैना से रिवायत है, फ़रमाते हैं:
नमाज़ की इक़ामत हुई. अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने देखा कि एक शख़्स नमाज़ पढ़ रहा है जबकि मुअज्ज़िन इक़ामत कह रहा था। इस पर आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया : क्या तुम सुबह की नमाज चार रकअत पढ़ रहे हो ?

عن عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَرْجِسَ قَالَ
دَخَلَ رَجُلٌ الْمَسْجِدَ وَرَسُولُ اللَّهِ فِي صَلَاةِ الْغَدَاةِ فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ فِي جَانِبِ الْمَسْجِدِ ثُمَّ دَخَلَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ
فَلَمَّا سَلَّمَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ قَالَ: يَا فُلَانُ بِأَيِّ الصَّلَاتَيْنِ اعْتَدَدْتَ؟ أَبِصَلَاتِكَ وَحْدَكَ أَمْ بِصَلَاتِكَ مَعَنَا؟
مسلم : كتاب صلاة المسافرين وقصرها ٦٧ – (٧١٢)]

अब्दुल्लाह बिन सरजिस से रिवायत है, फरमाते हैं:
एक शख़्स मस्जिद में दाख़िल हुआ और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) सुबह की नमाज़ पढ़ा रहे थे। उस में से एक शख्स ने मस्जिद के एक हिस्से में दो रक़तें अदा कीं और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ जमात में शरीक हो गया। जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने सलाम फेरा तो फरमाया : ऐ फुलां ! तुम अपनी किस नमाज़ को शुमार करोगे ? उस नमाज़ को जो तुमने तन्हा पढ़ी है या उस नमाज़ को जो हमारे साथ अदा की ?

41. नमाज़ में रुकुअ् व सुजूद में इमाम पर सबक़त ले जाना

قال : أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي إِمَامُكُمْ فَلَا تَسْبِقُونِي بِالرُّكُوعِ وَلَا بِالسُّجُودِ وَلَا بِالْقِيَامِ وَلَا بِالْإِنْصِرَافِ
مسلم: الصلاة ١١٢ – (٤٢٦)) عن أنس

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :

ऐ लोगो, मैं तुम्हारा इमाम हूं। लिहज़ा मुझसे पहले रुकुअ़' और सजदा ना करो, और ना ही क़ियाम और सलाम में मुझसे आगे बढ़ो।

قال : مَا يَأْمَنُ الَّذِي يَرْفَعُ رَأْسَهُ فِي صَلَاتِهِ قَبْلَ الْإِمَامِ أَنْ يُحَوِّلَ اللَّهُ صُورَتَهُ فِي صُورَةِ حِمَارٍ ؟
. مسلم: الصلاة ١١٥ – (٤٢٧)) عن أبي هريرة

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
जो शख़्स इमाम से पहले (रुकूअ़ और सजदे से) सर उठाता है, क्या वो इस बात से नहीं डरता कि अल्लाह तआला उसकी सूरत बदल कर गधे की सूरत बना दे ?

42. जमात में शरीक होने के लिए इमाम के सजदे से खड़े होने तक इंतजार करना

قال : إِذَا وَجَدْتُمُ الْإِمَامَ سَاجِدًا فَاسْجُدُوا أَوْ رَاكِعًا فَارْكَعُوا أَوْ قَائِمًا فَقُومُوا وَلَا تَعْتَدُّوا بِالسُّجُودِ إِذَا لَمْ تُدْرِكُوا الرَّكْعَةَ
أخرجه إسحاق بن منصور المروزي في مسائل أحمد وإسحاق)) عن ابن معقل المزني
الصحيحة ١١٨٨] ونحوه عند أبي داود (صحيح)

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
जब तुम इमाम को सजदे में पाओ तो तुम भी सजदा करो, या रुकूअ़ में पाओ तो तुम भी रुकूअ़ करो या क़ियाम मे पाओ तो तुम भी क़ियाम करो। और अगर तुम्हें रुकुअ़ ना मिले तो सज्दों को शुमार ना करो।

قال : إِذَا أَتَى أَحَدُكُمُ الصَّلَاةَ وَالْإِمَامُ عَلَى حَالٍ فَلْيَصْنَعْ كَمَا يَصْنَعُ الْإِمَامُ

(ترمذي) عن على ومعاذ . صحيح الجامع ٢٦١) (صحيح)

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
जब तुम में से कोई शख़्स (नमाज़ के लिए) आए और इमाम को किसी हाल में पाए तो उसे चाहिए कि वही करे जो इमाम कर रहा है।

43. इमाम की भूल पर सुब्हान-अल्लाह की बजाए अल्लाहु अकबर कहना

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ
مَنْ رَابَهُ شَيْءٌ فِي صَلَاتِهِ فَلْيُسَبِّحْ فَإِنَّهُ إِذَا سَبَّحَ الْتُفِتَ إِلَيْهِ وَإِنَّمَا التَّصْفِيقُ لِلنِّسَاءِ
بخاري: الأذان ٦٨٤ – مسلم: الصلاة ١٠٢ – (٤٢١))
عن سهل بن سعد الساعدي وفيه قصة

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
जिस शख़्स को नमाज़ में कोई मुआमला पेश आए तो वो सुब्हान-अल्लाह कहे। क्योंकि जब कोई सुबहान-अल्लाह कहेगा तो (इमाम) उसकी तरफ जरूर मुतवज्जे होगा। और तस्फीक [यानी हाथ की पुश्त पर हाथ मरना] औरतों के लिए है।

قال : التَّسْبِيحُ لِلرِّجَالِ وَالتَّصْفِيقُ لِلنِّسَاءِ. (1)
بخاري: الجمعة ١٢٠٣ – مسلم الصلاة ٦٤١] عن أبي هريرة

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
तस्बीह (यानी सुबहान-अल्लाह कहना) मर्दों के लिए है और तस्फीक (यानी हाथ की पुश्त पर हाथ मरना) औरतों के लिए है।

قال
إذا ربكم أمر، فليح الرجال، وليصبح النساء
خاري: الأحكام ٧١٩٠ – مسلمة الصلاة ١٠٢ – (٤٢١)) عن سهل بن سعد الساعدي واللفظ البخاري

44. नमाज़ के बाद इज्तेमाई दुआ करना

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ :
مَنْ عَمِلَ عَمَلًا لَيْسَ عَلَيْهِ أَمْرُنَا فَهُوَ رَدٌّ
بخاري: الإعتصام بالكتاب والسنة باب إذا اجتهد العامل أو الحاكم فأخطأ (تعليقا) –
مسلم: الأقضية ١٨ – (١٧١٨)] عن عائشة.

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
जो शख्स कोई ऐसा अमल करे जिसका हमने हुक्म नहीं दिया वह ना काबिल ए कबूल है।

قال :
مَنْ أَحْدَثَ فِي أَمْرِنَا هَذَا مَا لَيْسَ فِيهِ فَهُوَ رَدٌّ
هذا لفظ البخاري والمسلم :
مَنْ أَحْدَثَ فِي أَمْرِنَا هَذَا مَا لَيْسَ مِنْهُ فَهُوَ رَدٌّ
بخاري: الصلح ٢٦٩٧ – مسلم: الأقضية ١٧ – (١٧١٨) عن عائشة

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
जो हमारे इस दीन में कोई ऐसी चीज़ निकाले जो इस में नहीं थी वो काबिल ए रद्द है.
ये बुखारी की रिवायत के अल्फाज़ हैं।
और मुस्लिम की रिवायत में इस तरह है :
जो हमारे इस दीन में कोई ऐसी चीज़ निकाले जो उसमें से ना हो वो ना काबिल ए कबूल है।

45. दूसरों की नमाज़ क़ता’आ करना

عَنْ يُسْرِ بن سَعِيد
أَنَّ زَيْدَ بْنَ خَالِدٍ أَرْسَلَهُ إِلَى أَبِي جُهَيْمٍ يَسْأَلُهُ:
مَاذَا سَمِعَ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِي الْمَارِ بَيْنَ يَدَيِ الْمُصَلِّي؟
فَقَالَ أَبُو جُهَيْمٍ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ:
لَوْ يَعْلَمُ المَارُّ بَيْنَ يَدَيِ الْمُصَلِّي مَاذَا عَلَيْهِ
لَكَانَ أَنْ يَقِفَ أَرْبَعِينَ خَيْرًا لَهُ مِنْ أَنْ يَمُرَّ بَيْنَ يَدَيْهِ.
قَالَ أَبُو النَّضْرِ : لَا أَدْرِي، أَقَالَ أَرْبَعِينَ يَوْمًا، أَوْ شَهْرًا، أَوْ سَنَةً.
[بخاري الصلاة ٥١٠ – مسلم الصلاة ٢٦١ – (٥٠٧)]

बुस्र बिन सईद से रिवायत है कि
ज़ैद बिन खालिद ने उन्हें अबू जुहैम के पास भेजा कि नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाले के बारे में उन्होंने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से क्या बात सुनी है? तो अबू जुहैम ने बताया कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया : अगर नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाले को मालूम हो जाए कि उस पर कितना बड़ा गुनाह है तो वो नमाज़ी के आगे से गुज़रने की बजाए चालिस तक रुके रहना ज़्यादा पसंद करेगा।
हदीस के रावी अबू नज़र कहते हैं:
मुझे नहीं मालूम कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने चालीस दिन कहा, या चालीस महीने या चालीस साल।

46. मस्जिद में शोर करना

عَنْ أَبِي سَعِيدٍ
قَالَ اعْتَكَفَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِي الْمَسْجِدِ فَسَمِعَهُمْ يَجْهَرُونَ بِالْقِرَاءَةِ فَكَشَفَ السِّتْرَ
وَقَالَ: أَلَا إِنَّ كُلَّكُمْ مُنَاجٍ رَبَّهُ، فَلَا يُؤْذِيَنَّ بَعْضُكُمْ بَعْضًا وَلَا يَرْفَعْ بَعْضُكُمْ عَلَى بَعْضٍ فِي الْقِرَاءَةِ
– أَوْ قَالَ – فِي الصَّلَاةِ
[(مسند احمد، ابو داود، حاكم) عن أبي سعيد. (صحيح) [صحيح الجامع ٢٦٣٩

अबू सईद से रिवायत है, फरमाते हैं:
अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मस्जिद में एतकाफ़ किया। आप ने कुछ लोगों को ऊंची आवाज में क़िरात करते सुना तो आप ने पर्दा हटाया और फरमाया :
ख़बरदार, तुममें से हर एक अपने रब्ब से मुनाजात करता है, लिहाज़ा कोई शख़्स दूसरे को तकलीफ न दे। तुम में से कोई शख़्स क़िरात करते वक़्त दूसरे के मुक़ाबले में आवाज़ ऊँची ना करे।
या आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया : नमाज में (अपनी आवाज ऊंची न करे)।

قال :

وَإِيَّاكُمْ وَهَيْشَاتِ الْأَسْوَاقِ
مسلم : الصلاة ١٢٣ – (٤٣٢) عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
ख़बरदार ! (मस्जिद में) बाज़ारों की तरह शोर ओ घुल का माहौल न बनाओ।

47. नमाज़ के बाद अज़कार तर्क करके फौरन सुन्नत अदा करना

عن عُمَرُ بْنُ عَطَاءِ بْنِ أَبِي الْخُوَارِ
أَنَّ نَافِعَ بْنَ جُبَيْرٍ أَرْسَلَهُ إِلَى السَّائِبِ ابْنِ أُخْتِ نَمِرٍ يَسْأَلُهُ عَنْ شَيْءٍ رَآهُ مِنْهُ مُعَاوِيَةُ فِي الصَّلَاةِ فَقَالَ : نَعَمْ، صَلَّيْتُ مَعَهُ الْجُمُعَةَ فِي الْمَقْصُورَةِ فَلَمَّا سَلَّمَ الْإِمَامُ قُمْتُ فِي مَقَامِي فَصَلَّيْتُ فَلَمَّا دَخَلَ أَرْسَلَ إِلَيَّ فَقَالَ: لَا تَعُدْ لِمَا فَعَلْتَ إِذَا صَلَّيْتَ الْجُمُعَةَ فَلَا تَصِلْهَا بِصَلَاةٍ حَتَّى تَكَلَّمَ أَوْ تَخْرُجَ
فَإِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَمَرَنَا بِذَلِكَ أَنْ لَا تُوصَلَ صَلَاةٌ بِصَلَاةٍ حَتَّى نَتَكَلَّمَ أَوْ نَخْرُجَ.
[(مسلم: الجمعة ٧٣ – (٨٨٣)]

उमर बिन अता बिन अबी ख़ुवार से रिवायत है,
कि नाफ़े बिन जुबैर ने उन्हें साएब बिन उख़्त ए नामिर के पास उस चीज़ के मुतल्लिक पुछने के लिए भेजा जो हज़रत मुआविया ने उनकी नमाज़ में देखी थी। फरमाया : हां मैं ने हजरत मुआविया के साथ जुमुआ के दिन मस्जिद में बने छोटे कमरे में नमाज पढ़ी। जब इमाम ने सलाम फेरा तो मैं फ़ौरन अपनी जगह खड़ा हुआ और नमाज़ पढ़ने लगा। जब हजरत मुआविया अपने घर में दाखिल हुए तो मुझे बुलावा भेजा और फरमाया : तुमने जो कुछ किया उसे दोबारा मत करना। जब तुम जुमुआ की नमाज अदा करो तो उसके फौरन बाद नमाज ना शुरू करो, जब तक कुछ बात ना करो, या उस जगह से हट ना जाओ। इस लिए कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हमें इस बात का हुक्म दिया है कि हम एक नमाज़ को दूसरी नमाज़ से ना जोड़ें यहां तक कि बात कर लें या वहां से बाहर निकल जाएं।

48.इमाम का फ़र्ज़ की जगह ही सुन्नत अदा करना

قال :
لَا يُصَلِّي الْإِمَامُ
فِي مُقَامِهِ الَّذِي صَلَّى فِيهِ الْمَكْتُوبَةَ حَتَّى يَتَنَحَّى عَنْهُ
(ابو داود، ابن ماجه) عن المغيرة بن شعبة
(ابو داود، بتحقيق الألباني ٦١٦ ، ابن ماجه بتحقيق الألباني ١٤٢٨) (صحيح)

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया :
इमाम उसी जगह नमाज न पढ़े जहां उस ने फर्ज पढ़ी है, बल्कि उस जगह से जरा हट जाए।

स्रोत : शैख़ अबू ज़ैद ज़मीर हफ़िज़हुल्लाह